ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBIL**04292**
RNI REG. NO. UPBIL/**2014/66218** **PP. No.- 148-149**

I S S N NO. - 2347 – 2944 (Print)
e–I S S N NO.- 2582 – 2454 (Online)
Vol.-20, No.- II, Issues-40, YEAR- April-June 2026

जनपद बदायूँ के ग्रामीण क्षेत्रों में प्रचलित भगत प्रथा के सकारात्मक और नकारात्मक प्रभाव : एक समाजशास्त्रीय अध्ययन

कृष्ण वीर सिंह, 2. प्रो० पूनम सक्सेना

शोध अध्येत्री, बरेली कॉलेज, (महात्मा ज्योतिबा फुले रुहेलखण्ड विवि0) बरेली, 2. शोध निर्देशका व विभागाध्यक्ष– समाजशास्त्र विभाग, राजकीय महाविद्यालय, फरीदपुर, बरेली (उ0प्र0) भारत

Received-28.04.2026, Revised-07.05.2026, Accepted-15.05.2026, **E-mail: krishnavir121@gmail.com**

***सारांशः** भगत प्रथा से हमारा तात्पर्य एक ऐसी प्रथा से है, जिसमें ग्रामीणजनों का ऐसा विश्वास है, कि जब परिवार में किसी सदस्य का स्वास्थ्य खराब होता है, जो सामान्य इलाज से ठीक नहीं होता है, पशुओं की स्वास्थ्य रक्षा के लिए या फिर पुत्र जन्म या पुत्र की शादी के उपरान्त परिवार का मुखिया गाँव में एक या एक से अधिक व्यक्ति जिन्हें (भगतजी) कहा जाता है,से सम्पर्क कर अपनी पारिवारिक समस्याओं के बारे में बताता है, और उपाय जानना चाहता है तब भगत जी समस्या को समझकर उसे समाधान के रूप में भगत करने की सलाह देते हैं।*

मंडली के पुरुष स्त्री वेश रखकर नृत्य एवं जिस लोकदेवी–देवता को प्रसन्न करने के लिए भगत अनुष्ठान का आयोजन किया गया है, उसका यशगान करते हैं, और विशेष व्यक्ति भगत जी लोक देवी देवता के आने की प्रतीक्षा करते हैं जब विशिष्ट व्यक्ति भगतजी पर अदृश्य शक्ति का आगमन होता है, तो वह झूमने लगता है और उस पर अलौकिक शक्ति का प्रभाव दिखाई देने लगता है।

कुंजीभूत शब्द– भगत प्रथा, ग्रामीण समाज, यशगान, लोक देवी देवता, अलौकिक शक्ति ,भगत मंडली, प्रथा, परंपरा, भगतजी, भूत–प्रेत।

प्रस्तावना : भारत एक ऐसा देश जहाँ की 68.8 प्रतिशत जनसंख्या ग्रामीण क्षेत्रों में निवास करती है। भारतीय ग्रामीण समाज अपनी आजीविका के लिए मुख्य रूप से कृषि कार्य और पशुपालन पर आधारित रहा है। धर्म और भारतीय ग्रामीण समाज का अत्यंत घनिष्ठ संबंध रहा है। आज सम्पूर्ण भारतीय समाज आधुनिकीकरण की प्रक्रिया से प्रभावित है, इससे भारतीय गाँव भी अछूते नहीं है, लेकिन यह भी सत्य है कि आज 21वीं सदी में वैश्वीकरण और वैश्विक गाँव जैसी अवधारणाओं के प्रभाव होने के बावजूद भी बहुतायत में आज भी भारतीय ग्रामीणजन प्रत्येक कार्य के सफलतापूर्वक सम्पन्न होने या फिर असफल होने में धार्मिक दृष्टिकोण को सर्वाधिक महत्वपूर्ण मानते हैं और हर कार्य की सफलता एवं असफलता के लिए भाग्यवादी दृष्टिकोण और ईश्वरीय कृपा के होने को निर्धारित कारक के रूप में स्वीकार करते हैं। भारतीय ग्रामीण समाज में आज भी असाध्य रोगों के इलाज के लिए और अपने परिवार की सुख शांति, पशुओं को रोगों से बचाने के लिए, गृह क्लेश और अनेक व्याधियों को दूर करने के लिए ग्रामीणजन अनेक विशेष प्रथाओं और परंपराओं को न केवल स्वीकार करते हैं, बल्कि उनके माध्यम से अपने जीवन की अनेक समस्याओं को दूर करने के लिए इन प्रथाओं को अपने जीवन में विशेष महत्व प्रदान करते हैं। जहाँ एक ओर भारतीय ग्रामीण समाज में इंटरनेट, मोबाइल फोन, यातायात के तीव्र साधनों आदि का महत्वपूर्ण स्थान है वहीं यह भी सत्य है कि स्वतन्त्रता प्राप्ति के 78 वर्ष बाद भी सदियों से चली आ रही अनेक प्रथाओं ने भारतीय ग्रामीण समाज में अभी भी अपना महत्वपूर्ण स्थान बनाया हुआ है।

प्रस्तुत शोध में भारतीय ग्रामीण समाज में पायी जाने वाली एक ऐसी ही धार्मिक प्रथा का वैज्ञानिक अध्ययन का प्रयास किया गया है जिसे उत्तर प्रदेश के जनपद बदायूँ और आसपास के क्षेत्रों में भगत प्रथा के नाम से जाना जाता है। आनुभविक अध्ययन के आधार पर यह पाया गया है कि जनपद बदायूँ के ग्रामीण समाज में अधिकांश गाँवों में एकाधिक व्यक्ति विशेष जिनके विषय में ग्रामीणजनों में यह मान्यता और विश्वास रहता है कि उन व्यक्तियों पर कुछ समय के लिए अलौकिक शक्ति का वास होता है, जिसका वह उपासक होता है, इस विशेष व्यक्ति को भगत कहा जाता है, और यदि भगतजी सम्बन्धित व्यक्ति के घर पर भगत प्रथा अनुष्ठान आयोजन के समय उपस्थित हों और यदि उनसे अपनी पारिवारिक समस्याओं को बताया जाए और समाधान की प्रार्थना की जाए तो उस व्यक्ति विशेष पर आने वाले देवी–देवता समस्याओं का हल बताते हैं और ग्रामीणजन अपने जीवन की अनेक समस्याओं से दूर हो जाते है। यह आयोजन भगत प्रथा के रूप में प्रचलित है।

साहित्य पुनरावलोकन– देव सिंह पोखरिया 1994 लोक संस्कृति के विविध आयाम– जागर शब्द संस्कृत का है जिसका शाब्दिक अर्थ है जगाना। जागर में जगरिया (गाथागायक) देवता का अवतरण करता है, इसलिए उद्‌बोधन या चेतन कराने के अर्थ में भी "जागर" शब्द अर्थ संगत प्रतीत होता है। इस प्रकार "जागर" जागरण और उद्‌बोधन दोनों अर्थों की प्रतीति कराता है। देवी देवताओं को प्रसन्न करने या प्रेतबाधा निवारण हेतु रात्रिजागरण करके जो गाथाएँ गाई जाती हैं और जिनके गाने से देव विशेष चेतन होता है, उन्हें जागर कहते है।[1]

डॉ0 चमन लाल वर्मा 1997– मांड्यली सांस्कृतिक एवं सांगीतिक अध्ययन– भक्ति के प्रभाव से देवता की सम्पूर्ण शक्ति उसके विशेष प्रतिनिधिक "गूर" में आ जाती है। वाद्यों की लय के साथ झूमता तथा नृत्य करता "गूर" किसी भी प्रकार की भविष्यवाणी कर सकता है। देवता के आगमन से लोग अपनी–अपनी समस्याओं को देवता से कहते है। देवता उनका समाधान करता है।"[2]

ताज रावत 2007 पर्यावरण, पर्यटन एवं लोक संस्कृति– नामक कृति में कुछ प्रमुख लोक देवी देवताओं और उनके प्रसन्न करने के लिए आयोजित होने वाले अनुष्ठानों की चर्चा की है। कासन देवता यह दो भाई हैं और हमेशा गोलू देवता के साथ रहते हैं इनकी धूपबत्ती से पूजा की जाती है। प्रमुख लोक देवियों में पहली झाली माली, दूसरी लभखडी देवी, तीसरी जौमती देवी, ज्वाला देवी, डाडा नागरजा, मडघट खाल भूत देवता, धारी देवी,बालण देवता, चौरीदेवी इनके अलावा और अनेक क्षेत्रीय देवी देवता हैं लोग इन्हें प्रसन्न कर अपनी मनोवांछित कामनाओं की पूर्ति करते हैं।[3]

डी0डी0 शर्मा 2011 उत्तराखंड के लोक देवता– नामक अपनी कृति में जागर परंपरा के संबंध में इस प्रकार लिखा है जागर गान जागर प्रक्रिया का महत्वपूर्ण अंग होता है जिसमें जगरिया द्वारा आवाहन उद्‌बोधन तथा अवतरण के लिए उसका गुणगान किया जाता है जिसे जागरी भाषा में विनती करना कहा जाता है इसमें देवता विशेष की जीवनी से संबंधित तथ्यों एवं जागरियों द्वारा जोड़े गए अन्यान्य प्रक्षेपों का एक अद्‌भुत पुष्टिकरण होता है जोकि जागरिये कि कल्पना शक्ति के आधार पर विभिन्न रूप धारण करता है। इसीलिए जागर गाथाओ में विभिन्न देवताओं से संबंधित गाथाओं के विभिन्न कथा तत्व पाए जाते हैं।[4]

शोध अभिकल्प एवं पद्धतिशास्त्र– प्रस्तुत शोध में अन्वेषणात्मक एवं वर्णनात्मक शोध प्रचना का प्रयोग किया गया है। जनपद बदायूँ के ग्रामीण क्षेत्रों को चयनित करने में उद्‌देश्यात्मक प्रतिचयन विधि का प्रयोग किया है व ग्रामीण क्षेत्रों में इकाईयों का चयन करने के लिए हिमगेंद प्रतिचयन विधि ँ;दवूइंसस ेउचसपदहद्ध को उपयोग में लाया गया है।

अनुरूपी लेखक / संयुक्त लेखक

ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBIL04292
RNI REG. NO. UPBIL/2014/66218
I S S N NO. - 2347 – 2944 (Print)
e–I S S N NO.- 2582 – 2454 (Online)
Vol.-20, No.- II, Issues-40, YEAR- April-June 2026

अध्ययन क्षेत्र– प्रस्तुत अध्ययन उत्तर प्रदेश राज्य के जनपद (बदायूँ) के ग्रामीण क्षेत्रों पर केन्द्रित है। 2011 की जनगणना के अनुसार बदायूँ की जनसंख्या 31,29,000 है जिसमें पुरुषों की संख्या 16,71,000 एवं महिलाओं की संख्या 14,58000 है। जनसंख्या का घनत्व 2011 के अनुसार 712 व्यक्ति वर्ग किमी. है। साक्षरता दर 51.29 प्रतिशत है जिसमें पुरुष साक्षरता दर 68.98 प्रतिशत एवं महिला साक्षरता दर 40.09 प्रतिशत है जोकि निम्न है। जनपद बदायूँ में लिंगानुपात 1000 पुरुषों पर महिलाओं की संख्या 871 है। बदायूँ जिला अपने आप में भौगोलिक दृष्टि से एक वृहद जनपद के रूप में जाना जाता है, बदायूँ में कुल 5 तहसील एवं 18 विकासखण्ड हैं।

शोध प्रविधि– चूँकि यह प्रथा जनपद बदायूँ के ग्रामीण क्षेत्रों में प्रचलित है इसलिए स्नोबॉल निदर्शन के आधार पर गाँवों में जाकर व्यक्तियों से सम्पर्क स्थापित कर शोध कार्य को आगे बढ़ाया गया है एवं अनुसंधानकर्ता द्वारा तथ्य संकलन के लिए साक्षात्कार अनुसूची को प्रयोग में लाया गया है शोधार्थी द्वारा परिवार के मुखिया से सम्पर्क स्थापित कर उनसे इस प्रथा के सम्बन्ध में जानकारी एकत्र की गयी है उत्तरदाता पुरुष एवं महिला मुखिया दोनों हैं।

तथ्य संकलन– प्रस्तुत अध्ययन मुख्य रूप से प्राथमिक एवं द्वितीयक आँकड़ों पर आधारित है प्राथमिक आँकड़े एकत्र करने के लिए मुख्य रूप से स्वनिर्मित साक्षात्कार अनुसूची का प्रयोग किया गया है तथा आवश्यकतानुसार द्वितीयक तथ्यों को प्रयोग में लाया गया है ।

अध्ययन के उद्देश्य– प्रस्तावित शोध कार्य का प्रमुख उद्देश्य जनपद बदायूँ के ग्रामीण क्षेत्रों में प्रचलित भगत प्रथा के सकारात्मक एवं नकारात्मक प्रभावों को जानने से सम्बन्धित है। प्रस्तुत अध्ययन जनपद बदायूं के ग्रामीण क्षेत्र के कुल 265 उत्तरदाताओं पुरुष एवं महिला मुखिया पर आधारित है। इन्हीं से विभिन्न प्रश्नों के आधार पर तथ्यों को प्राप्त कर भगत प्रथा के सकारात्मक एवं नकारात्मक प्रभावों को वैज्ञानिकता के आधार पर प्रस्तुत किया गया है तथा प्रथम प्रश्न के आधार पर पाया गया कि चयनित सर्वाधिक 78.2 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने माना कि भगत अनुष्ठान आयोजन उपरांत सकारात्मक प्रभाव पड़ा। क्रमशः 16.4 व 5.4 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने थोड़ा बहुत सकारात्मक प्रभाव एवं कोई प्रभाव नहीं पड़ा। सकारात्मक प्रभाव सम्बन्धी प्रश्न के प्रतिउत्तर में 74.3 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने माना कि प्रेत आत्मा के प्रभाव से उनके परिवार को मुक्ति मिली। बीमारी से मुक्त होने व गृह क्लेश की समाप्ति का प्रतिशत क्रमशः 15.04 व 10.03 प्रतिशत रहा। कोई सकारात्मक प्रभाव न होने के मुख्य कारण के रूप में शत प्रतिशत उत्तरदाताओं ने माना भगत अनुष्ठान लोक देवी देवताओं द्वारा स्वीकार नहीं हुआ, स्वीकार न होने की दशा में क्या अनुष्ठान दोबारा करेंगे? तो शत प्रतिशत उत्तरदाताओं ने माना कि दोबारा करेंगे भगत उपरांत परिवार में उन्नति के बारे में 73.02 प्रतिशत ने माना की उन्नति हुई 18. 03 प्रतिशत ने थोड़ी बहुत उन्नति स्वीकार की जबकि 8.05 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने माना कि कोई उन्नति नहीं हुई भगत अनुष्ठान आयोजन के लिए ब्याज पर रुपया लेने के बारे में जब पूछा गया तो 23.02 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने माना कि उन्होंने कर्ज लेकर भगत की,ऋण किससे लिया इसके उत्तर में 56.01 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने बैंक से 35.03 प्रतिशत ने ग्राम वासियों से 7.05 प्रतिशत ने रिश्तेदारों से और 1.1 प्रतिशत ने साहूकारों से भगत अनुष्ठान आयोजन के लिए ऋण प्राप्त किया।

निष्कर्ष रूप में हम कह सकते हैं कि जनपद बदायूँ के ग्रामीण क्षेत्रों में प्रचलित भगत प्रथा ग्रामीण जीवन को बहुत अधिक प्रभावित करती है इसके सकारात्मक प्रभावों के बारे में उत्तरदाताओं ने स्पष्ट किया किसी परिवार में यदि लोक देवी देवता के रुष्ट होने से समस्या आती है तो वह भगत अनुष्ठान के उपरांत ही सुखी जीवन व्यतीत कर पाते हैं और यदि किसी कारणवश लोक देवी देवताओं द्वारा भगत अनुष्ठान स्वीकार नहीं होता तो वही अनुष्ठान संबंधित परिवार द्वारा अनिवार्यरूप से दोबारा करना होता है। ग्रामीण जनों का ऐसा मानना है कि जब लोक देवी देवता परिवार पर अपनी कृपा दृष्टि बनाए रखते हैं तो परिवार की प्रगति होती रहती है उनके रुष्ट होने का अर्थ है परिवार की प्रगति का रुक जाना। नकारात्मक प्रभाव की अगर बात करें तो स्पष्ट होता है की भगत आयोजन के लिए संबंधित परिवार ने यदि प्रण किया है कि वह इस महीने में अमुक दिनांक को आयोजन करेगा तो खर्च होने वाली धन राशि यदि उपलब्ध नहीं है तो वह ग्रामीण ग्राम वासियों से या साहूकार से भी ऋण लेता है ताकि भगत समय पर संपन्न हो सके परेशानियां चाहे जो हो लेकिन वे ग्रामीण जन जिनके यहां भगत होती है उन्हें यह अनुष्ठान करना ही है क्योंकि यह उनके जीवन का आवश्यक अंग बन चुका है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. पोखरिया, देव सिंह य लोक संस्कृति के विविध आयामःमध्य हिमालय के सन्दर्भ में य अल्मोडा बुक डिपो अल्मोडा, 1994, पृ. 63.
2. वर्मा चमन लाल य मांड्यली सांस्कृतिक एवं सांगीतिक अध्ययन य निर्मला पब्लिकेशन दिल्ली, 1994,पृ. 74.
3. रावत ताज य पर्यावरण, पर्यटन एवं लोक संस्कृति य न्यू. अकेडमिक पब्लि. नई दिल्ली, 2007, पृ. 291, 292.
4. शर्मा डी.डी. य उत्तराखंड के लोक देवता य अंकित प्रकाशन पीली कोठी हल्द्वानी, 2011, पृ. 68.

*****